ISSN : 2395-5821

सयुंक्तांक 8+9, जुलाई 2019

गगनांचल

अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिकी

UPHIN/2015/68782

यूरोप विशेषांक

हिंदी जगत की शीर्ष
साहित्यिक पत्रिका
शाश्वत मूल्यों, वैश्विक सरोकार एवं
मानवीय संवेदना की
संवाहक त्रैमासिकी

₹ 30/-

Scanned with CamScanner

AIPC की प्रस्तुति
(Regd. No. 987)
www.aipc.weebly.com

अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिकी

UPHIN/2015/68782

ISSN : 2395-5821

संयुक्तांक : 8+9 : जुलाई 2019

हिंदी जगत की शीर्ष साहित्यिक पत्रिका
शाश्वत मूल्यों, वैश्विक सरोकार एवं मानवीय संवेदना की संवाहक त्रैमासिकी

कालजयी

यूरोप विशेषांक

www.kaljayee.weebly.com

प्रधान संपादक :
डॉ. लारी आज़ाद
www.drlariazad.weebly.com

प्रबंध संपादक :
डॉ. रोशन आरा

संपादक मण्डल :
डॉ. आशा गुप्ता, जमशेदपुर
डॉ. वंदना श्रीवास्तव, लखनऊ
करूणा झा, नेपाल
प्रभा भार्गव, दिल्ली
डॉ. कमला माहेश्वरी 'कमल', बदायूँ
ज्योति नारायण, हैदराबाद
सुनीता खोखा, नोएडा
डॉ. अशोक बाचूलकर, आज़रा
सीमा गुप्ता, गुड़गाँव
डॉ. सुनीता सुमन, बेगू सराय
डॉ. इन्दु रश्मि, गुलबर्गा
सरोजा मेटी, मुम्बई

संरक्षक मण्डल :
डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली', हिमाचल
डॉ. सुप्रिया पी., कालीकट
बबिता जैन, नलबाड़ी
डॉ. शक्तिबोध, दिल्ली
डॉ. सीमा चन्दन, कन्नूर
रुक्मिणी भण्डारी, काठमांडू
डॉ. विजयलक्ष्मी कोसगी, गुलबर्गा
डॉ. नजमा मलिक, भरुच
डॉ. मधूलिका अग्रवाल, रायपुर
मनमोहन चन्द्र जैन, कोरबा
डॉ. के. पी. सुधीरा, कालीकट
डॉ. अमिनेश शर्मा, अलीगढ़
मोनोमती कुर्मी, तेजपुर
अंजु हतीबरुआ, तिनसुकिया
अमित प्रकाश, मुज़फ्फ़रनगर
सुराजिता हांडिक, डिब्रूगढ़
सुमन कामथ, हुबली
महेश अग्रवाल, मुरादाबाद
पुष्पा शर्मा, अलीगढ़
नायाब ज़ेहरा ज़ैदी, मेरठ

ब्यूरो प्रमुख :
डॉ. संध्या पी. मेरिया, दमण
डॉ. चन्द्रावती नागेश्वर, कोरबा
डॉ. कविता रायज़ादा, आगरा
किरनमोई हज़ारिका, डुमडुमा
नीतू सैनी, बंगलौर

प्रतिनिधि :
डॉ. सुमन शर्मा, भाव नगर
अनीता पंडा, शिलांग
डॉ. सुशीला ढाका, सीकर
डॉ. मनीषा जैन, छिंदवाड़ा
आराधना श्रीवास्तव, आगरा
आरती अंगड़ी, बेलगाँव

स्तम्भकार :
सुनन्दा एस. मुले, बेलगाँव
सुस्मिता दास, शिलांग
फाल्गुनी चक्रवर्ती, शिलांग
सरिता चतुर्वेदी, दिल्ली
डॉ. मोनिका शर्मा, अलीगढ़
साधना पाण्डेय, मथुरा

छायाकार : **डॉ. ऋतु गौड़, बनारस**

कला प्रतिनिधि : **फ़रहत रज़ा, दिल्ली**

विदेश प्रतिनिधिः
एलीसिया माकोव्स्काया, बेलारुस
इंदिरा ग़ाज़ियेवा, रुस
राज हीरामन, मॉरीशस

विधि सलाहकारः **एड. असलम लारी**

विश्वविद्यालय प्रतिनिधि : **नूर सुफ़िया लारी**

युवा प्रतिनिधि : **चिन्मोई गोगोई, मुम्बई**

संवाददाताः
इन्द्र कुमार दीक्षित, डॉ. प्रभा शर्मा, दिल्ली

सम्पादकीय कार्यालय :
ए–2, समी अपार्टमेंट,दोधपुर,
अलीगढ़–202 001 (उ0प्र0)
दूरभाष–0571–2705555, 8791150515
ई–मेल – **kaljayeemagazine@gmail.com**
(ऑनलाइन संस्करण भी उपलब्ध)

दिल्ली कैम्प कार्यालय :
सी–10, ग्रीन पार्क (मेन), नई दिल्ली–110016
पूर्वांचल कैंप कार्यालय :
राशिदा तबस्सुम,
बिजली मीटर कार्यालय के समीप, निकट विजय सिनेमा,
देवरिया – 274 001

- **सभी पद मानद / अवैतनिक**
  (विवाद निपटारे का क्षेत्र अलीगढ़ न्यायिक क्षेत्र)
- **आजीवन सदस्यता : ` 1500 (डाक व्यय ` 500 अतिरिक्त)**
  विदेश में : $ 200 (एयर मेल)
  $ 150 (सी मेल)
  एक अंक : ₹ 30
- **विज्ञापन दर : मुख्य पृष्ठ कवर (इन्सेट) : `₹ 35000**
  पृष्ठ कवर : ` ₹ 30000
  रंगीन पृष्ठ कवर 2 व 3 : ₹ 25000
  रंगीन पृष्ठ 1 : ₹ 20000
  ½ : ₹ 15000
  ¼ : ₹ 10000
  श्वेत–श्याम पृष्ठ 1 : ₹ 15000
  ½ : ₹ 10000
  ¼ : ₹ 5000

'कालजयी' में प्रकाशित सभी लेखों पर संपादक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है 'कालजयी' में प्रकाशित लेख व तस्वीरें 'कालजयी' की प्रॉपर्टी हैं, इसका कोई भी लेख, लेख का कोई अंश या तस्वीरें प्रकाशित करने से पहले 'कालजयी' से लिखित अनुमति लेना जरूरी है और 'कालजयी' में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित किसी भी प्रकार की जवाबदेही प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी प्रकार की जानकारी देने के लिए बाध्य नहीं है।

चेतावनी – 'कालजयी' में विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के संबंध में तथ्यपूर्ण जानकारी होने की हमने पूरी सावधानी बरती है, फिर भी पाठकों को चेतावनी दी जाती है कि अपने चिकित्सक की सलाह से ही औषधि लें, क्योंकि शारीरिक शक्ति अलग–अलग होती है, जिससे दवा की मात्रा व्यक्ति की क्षमता के अनुसार निर्धारित करना जरूरी है।

प्रकाशक श्रीमती रोशन आरा द्वारा A–2, समी एपार्टमेंट, दोधपुर, अलीगढ़ से प्रकाशित तथा लिथो ऑफसेट प्रेस, अचल ताल, अलीगढ़–202001 से मुद्रित, संपादक – डॉ. एम.ए. लारी आज़ाद।

Scanned with CamScanner

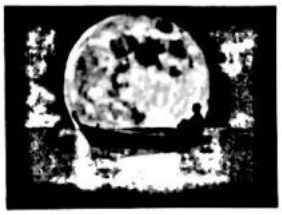

कालजयी

संयुक्तांक 8+9 : जुलाई 2019

अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिकी

www.kaljayee.weebly.com

क्या कहाँ ?

यूरोप विशेषांक

यूरोप से :

- तेजेन्द्र शर्मा कहानी, शवयात्रा
- ज़किया जुबेरी, कहानी, तमाम उम्र का हिसाब
- जया वर्मा, कहानी, डोरीन
- अरुणा सभरवाल, कहानी, ब्रेक्सिट ब्रेक्सिट क्या है!
- कदम मेहरा, लेख : भारत की बिछड़ी संताने रोमा / जिप्सी
- दिव्या माथुर, क्षणिकाएँ
- स्वर्ण तलवाड़, कविताएँ
- अर्चना पेन्युली,

विदेश से:

- कहानी, दो अकेले इंसान
- सुषम बेदी, कहानी, जमी बर्फ़ का कवच
- देवी नागरानी, कहानी, कमली
- हंसादीप, कनाडा : पेरिस की एक रंगीन शाम
- शकुन्तला बहादुर, संस्करण, अविस्मरणीय पड़ोसी विल्डे
- डॉ. चन्द्रावती नागेश्वर, यू.एस.ए. : धरती का स्वर्ग स्वीटज़सलैण्ड
- धर्म जैन, कनाडा : कविताएँ

कविताएँ :

- इरम फ़ातिमा आशी, प्रभा शर्मा, सुनीता खोखा,
- डॉ. रुचि सुमैया, शालिनी मुखरैया, डॉ. सुमन शर्मा,
- डॉ. कमला माहेश्वरी, मीना शर्मा, सुनंदा मुले,

निबंध :

- मृदुला गर्ग, संस्मरण : द्रुबोवनिक की याद में
- लारी आज़ाद, पाश्चात्य साहित्य में नारी
- डॉ. इन्दु के.वी., तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में मनोविज्ञान
- डॉ. सुप्रिया पी., रोम रोम में यूरोप
- डॉ. प्रभा पंत, प्रवासी हिन्दी साहित्य
- डॉ. अमृता सिंह, सुषम वेदी की कहानियाँ
- लारी आज़ाद, मेरी यूरोप यात्रा
- सुधा आदेश, यात्रा सस्मरण
- संतोष श्रीवास्तव, यात्रा सस्मरण
- नूर सूफिया लारी, प्रेरक नारीयाँ

ए.आई.पी.सी. परिशिष्ट

- यूरोप में ए.आई.पी.सी. का पहला कदम, यू.के.
- यूरोप में ए.आई.पी.सी. का दूसरा कदम, ईस्तन्बूल
- यूरोप में ए.आई.पी.सी. का तीसरा कदम, मॉस्को व सेंट पीटर्सबर्ग
- यूरोप में ए.आई.पी.सी. का चौथा कदम, यूरोप

स्थायी स्तम्भ :

- समाचार : दिव्या माथुर, यू.के.,
- गिरीश कर्नाड को लंदन वासियों की श्रद्धाजंलि

भंगिमा :

- रूचि सुमैया

कालजयी परिवार

Scanned with CamScanner

रोम रोम में यूरोप स्पंदन

डॉ. सुप्रिया पी, कासरगोड (केरल)

'यूरोप' शब्द हमेशा से एक जिज्ञासा मन में पैदा करता रहा है। सात महाद्वीपों में से ऐसा महाद्वीप जो एशिया से पूरी तरह जुड़ा है। यूरोप अपने ऐतिहासिकता और भौगोलिकता की सविशेषताओं के साथ दुनिया में पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध लिए हर व्यक्ति के मन में एक अजीब आकर्षण जगाती है। हिन्दी साहित्य की विद्यार्थी रहकर विश्व भर के साहित्य, सभ्यता–संस्कृति, आचार–विचार, कार्य–व्यवहार को पढ़ने, परखने के अवसर मिलता रहता है। अपने शोध के लिए एक ऐसा विषय चुना जिसमें साहित्य के जरिए विश्व भर का भ्रमण कर सकूं। 'हिन्दी उपन्यास के विदेशी पात्र' के माध्यम से भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति को समझने का मेरा विनम्र प्रयास रहा। तबसे यूरोप के प्रति आकर्षण मन में जगा और संयोगवश अखिल भारतीय कवियत्री सम्मलेन का अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन यूरोप में संपन्न होने की खबर ने रोंगटे खड़े कर दिए। 2019 में AIPC की यूरोप यात्रा इस अध्ययन को विस्तार देते हुए मेरी चिंतन और मेरी चेतना का भी विस्तार करेगी।

आरंभकालीन हिन्दी उपन्यासों में हिन्दी प्रदेश और वहाँ के लोगों को पात्र के रूप में स्थान मिला था। बाद में हिन्दी उपन्यास हिन्दी परिवेश और पात्रों तक सीमित न रहकर दूसरे प्रदेशों और राष्ट्रों की ओर उसका प्रयाण हुआ। स्वातंत्र्योत्तर युग में लेखकों को विदेश यात्रा के काफी अवसर मिले। विभिन्न राष्ट्रों के बीच राजनयिक संबंध जुड़ने के कारण भी यह संभव हो सका। ऐसी स्थिति में लेखकों को अन्य राष्ट्रों की संस्कृति और उनके जीवन–मूल्यों के बारे में प्रथम कोटि की जानकारी मिली। इसी को आधार बनाकर आज के अनेक उपन्यासों में विदेशी परिवेश और जीवन– मूल्य चित्रित हुए है। कथाभूमि के विस्तार से पाठकों का लाभ भी हुआ। देश–विदेश की संस्कृति, आचार–विचार, जीवन रीतियों, दृष्टिकोण आदि को समझने में ये उपन्यास काफी सहायक रहे।

विदेशी परिवेश को लेकर लिखने वाले लेखकों में अज्ञेय, निर्मल वर्मा, प्रभाकर माचवे, महेन्द्र भल्ला, गिरीश अस्थाना, योगेश कुमार, महीप सिंह, भगवतस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ. देवराज, अमृतलाल नागर और शशि महाजन प्रमुख हैं। विदेशी परिवेश को लेकर लिखने में लेखिकाएँ भी पीछे नहीं रही। इनमें प्रमुख हैं–उषा प्रियंवदा, कमल कुमार, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, सुनीता जैन, मीनाक्षी पुरी, नासिरा शर्मा और सुषम बेदी। लेखिकाओं ने विदेशी परिवेश में आधुनिक स्त्री के नैतिक संकट, दांपत्य जीवन में सामंजस्य की समस्या आदि का चित्रण किया है। यहाँ हिन्दी उपन्यास के कुछ यूरोपीय पात्रों के माध्यम से यूरोप को समझने–परखने का मेरा प्रयास है।

अज्ञेय के 'अपने अपने अजनबी' की कथाभूमि स्विट्जरलैंड है। दो यूरोपीय पात्र – योके और सेल्मा, के माध्यम से उपन्यासकार ने यूरोप के चिंतन में जीवन, मृत्यु, वरण की स्वतंत्रता, आस्था आदि प्रश्नों पर विचार किया है। मृत्यु के संबंध में पूर्व और पश्चिम की दृष्टियों को सामने लाने का प्रयास हुआ है। सेल्मा ऐकेलोफ भयंकर हिमपात के कारण योके के साथ झोपड़ी में कैद हो गई है। योके अपने प्रेमी पॉल के साथ घूमने के लिए पहाड़ियों पर आती है और दुर्भाग्यवश हिमपात में बूढ़िया सेल्मा के घर में कैद हो जाती है। सेल्मा में जीवन का सहज स्वीकार है, सुख का भी तो दुख का भी। जीवन को पूर्णतया जीने में विश्वास रखने वाली सेल्मा नियति या भाग्य की शक्ति को स्वीकार करती है। वह मानती है कि मनुष्य की स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है, कुछ भी किसी के वश का नहीं है। एक ही बात हमारे वश की है – इस बात को पहचान लेना। सेल्मा ईश्वर में विश्वास रखती है। ईश्वर के होने को वह निश्चित रूप से नहीं जानती लेकिन मौत की उपस्थिति व मौत के क्षणों में उसने ईश्वर को मान लिया है। सेल्मा कैंसर से पीड़ित है और कभी भी मृत्यु को प्राप्त हो सकती है। लेकिन मृत्यु के भय से चिन्तित न होकर वह ईश्वर को पूर्णतया समर्पित है। सेल्मा जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखती है। अन्धेरी, ठंडी, कब्र समान जगह में बन्द होकर भी वह बाहर खिली–खिली धूप की कल्पना करती है। मौत के साये में भी वह सहज रूप से क्रिसमस मनाती है और गीत गाती है। योके ईश्वर में विश्वास नहीं रखती। वह मौत को भी नहीं मानना चाहती क्योंकि मौत का अनुभव जीते – जी के अनुभव से परे है इसलिए वह अवास्तविक है। सेल्मा का विचित्र व्यवहार उसके चरित्र को रहस्यमय बना देता है और योके को उस पर विश्वास नहीं होता और उसे मार डालना चाहती है। सेल्मा अपनी हत्या की चेष्टा करने वाली योके के साथ भी क्षमाशीलता और उदारता का व्यवहार करती है।

सेल्मा की मौत के बाद योके को सर्वत्र मृत्यु गन्ध का अहसास होने लगता है। अपने को एकदम अकेला या मृत्यु से भयभीत योके उन्माद की अवस्था में पहुँच जाती है। सेल्मा की मौत योके में ईश्वर के प्रति आस्था उत्पन्न करने के स्थान पर उससे घृणा कराती है। ईश्वर ने उसे ऐसी परिस्थिति में डाला, यह सोचकर उसे न केवल ईश्वर पर आक्रोश पैदा होता है वरन् ईश्वर मरा हुआ नज़र आता है। अंतिम समय में योके मरियम बन गई है, जो एक वेश्या है। जीवन के अंत में योके युद्धोत्तर स्थितियों की विडंबना का शिकार हो जाती है। वह स्वयं को मरियम ईसा की माँ – ईश्वर की माँ मरियम कहते हुए मृत्यु से ऊपर उठ जाती है। अज्ञेय ने योके की परिकल्पना एक यूरोपीय अस्तित्ववादी विचारधारा के प्रतिनिधि के रूप में की है जो वरण की स्वतंत्रता में पूरी तरह विश्वास करती है।

निर्मल वर्मा का 'वे दिन' हिन्दी का पहला अंतर्राष्ट्रीय उपन्यास माना जाता है। वे दिन की कथाभूमि चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग शहर है। इसके पात्र यूरोपीय हैं – फ्रांज़ जर्मन है, टी.टी. बर्मी है, मारिया चेक और रायना आस्ट्रियन। केवल कथानायक मैं भारतीय है। एक संवेदनशील भारतीय पात्र के अवलोकन बिन्दु से युद्ध के बाद यूरोप में फैले हताशा और अवसाद से भरा परिवेश प्रस्तुत किया गया है। रायना आस्ट्रियन है। रायना का बचपन युद्ध की आतंकग्रस्त छाया में बीता था जो उसके वर्तमान को हमेशा दबोचे रहती है। उसकी आतंकग्रस्त आँखें, आँखों का ठण्डापन व आँखों से झाँकती बेचैनी अतीत से आक्रान्त रायना की मनःस्थिति पर प्रकाश डालती है। छोटी– छोटी बातें उसे अतीत में धकेल देती हैं। बेहद थकने पर उसे याद आता है कि इस तरह की थकान बरसों से नहीं हुई, सिर्फ लड़ाई के दिनों में होती थी। रायना अतीत से ग्रस्त वर्तमान में अकेलापन व भयावहता महसूस करती है। उसे लगातार लड़ाई के दिन, जॉक से अपना प्रेम और विवाह संबंध याद आते हैं। युद्ध के कठिन समय में जॉक व रायना साथी बने थे जिसकी आगे चलकर एक संबंध में परिणति हुई थी लेकिन जॉक युद्ध के भय, आतंक व मृत्यु की छाया से मुक्त नहीं हो पाता। रायना उस मनःस्थिति से उबरना चाहती थी लेकिन उबरकर भी उसे हाथ केवल अकेलापन व अतीत की स्मृतियाँ ही मिलीं।

इसी उपन्यास का फ्रांज़ बर्लिन (जर्मन) का रहने वाला था। वह सिनेमाटोग्राफी का छात्र था और उसे पूर्वी जर्मन से प्राग के सिनेमा–स्कूल में अध्ययन करने का स्कॉलरशिप मिला था। फ्रांज़ का बचपन लड़ाई में गुज़रा था और इस लड़ाई का प्रभाव इतनी बुरी तरह से उसकी चेतना में समा गया था कि वह प्रयत्न करने पर भी उसकी छाया से मुक्ति नहीं पा सका। कभी–कभी वह लड़ाई के बारे में कुछ घटनाएँ सुनाता था, किन्तु कुछ ऐसे तटस्थ भाव से कि यह निश्चय नहीं हो पाता था कि वह लड़ाई

Scanned with CamScanner